International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-5 October- 2014
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

सिंधु सभ्यता का उदगम् एवं पराभाव
(तत्कालीन व्यवसाय, वाणिज्य एवं प्रशासनिक परिस्थितियों के विशेष संदर्भ में)

Dr. Neeraj Kumar
D.Litt., Associate Proffessor
Deptt. of Commerce & Business Administration,
J.V.Jain (PG) College, Saharanpur.

Dr. Tarun Jain
D.Litt., Assistant Proffesor
Deptt. of Commerce & Business Administration
D.J. College Baraut

कभी–कभी प्राचीन सभ्यताओं की खोज अकस्मात् हो जाती है। सन् 1856 में दो भाई जेम्स व विलियम बर्टन रेलवे लाईन बिछाने के लिए जमीन खोद रहे थे। जब उन्होंने निकट के पहाड़ी टीले से ईंटे निकालने का प्रयास किया तो उन्हें इस सभ्यता के अवशेष प्राप्त हुए। यहीं खुदाई प्राचीन सभ्यता के दो प्रमुख नगर हड़प्पा (पश्चिमी पंजाब) व मोहनजोदड़ो (सिंध) की खोज की आधारशिला बन गयी। इस सभ्यता की खोज का श्रेय राय बहादुर दयाराम को दिया जाता है जिन्होंने सन् 1921–22 में सर जॉन मार्शल के नेतृत्व में इस सभ्यता (हड़प्पा स्थान) की खोज की। इसके एक वर्ष बाद 1922 में एक अन्य स्थान की खोज पाकिस्तान के लरकाना प्रान्त में हुई। प्रारम्भ में इस सभ्यता को सिंधु घाटी तक ही सीमित समझा गया। अतः इसे सिंधु सभ्यता कहा गया। परन्तु जब इसके अवशेष घाटी के बाहर भी मिलने लगे तो इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता कहा जाने लगा, क्योंकि इस सभ्यता के प्रथम अवशेष हड़प्पा नामक स्थान पर पाये गये। इस सभ्यता से संबंधित भारत में अबतक लगभग 1000 स्थान ढूढें जा चुके हैं। सिंधु सभ्यता कुल मिलाकर लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर में फैली है जो कि एक त्रिभुज की भाँति दिखती है।

सिंधु सभ्यता के निर्माता व निवासी अज्ञात हैं। खोपड़ी के अवशेषों के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जनसंख्या में भूमध्यसागरीय, पर्वतीय व मंगोलों का प्रभाव था। शारीरिक संरचना में परिवर्तनों व अस्थि पिंजरों के अवशेषों का आलोचनात्मक अध्ययन के आधार पर डा. डी. के. सेन ने निष्कर्ष निकाला है कि लोग सिर की आकृति, नाक की बनावट आदि

के आधार पर एकरूप या सजातीय थे। उनका वास्तविक मिश्रण चाहे जो भी हो किन्तु जैविक समूह के आधार पर उन्हें भिन्न भिन्न जातियों व उपजातियों में नहीं बाँटा जा सकता।

1.धातुएँ व माप तौल के साधन–

सिधु सभ्यता के लोगों को लोहे का ज्ञान न था किन्तु उन्हें सोना, चाँदी, ताँबा व कॉपर का ज्ञान था। हाथी दाँत व हड्डियों का भी प्रयोग किया जाता था। कली व सीसे आदि के प्रयोग के भी साक्ष्य मिलें हैं। यद्यपि अभी सिधु सभ्यता की लिपि नहीं पढी जा सकी है किन्तु भाषा की जानकारी से व्यवसाय के खातों व निजी सम्पत्ति का हिसाब किताब रखने के तरीकों के विषय में जानकारी मिल सकती है। ऐसी बहुत सी वस्तुऐं, भार एवं व्यापार में काम आने वाली वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जिनका सिंधु सभ्यता के शहरी लोग अपने व्यवसाय में माप तौल के लिए प्रयोग करते थे। यें वस्तुऐं प्रकट करती हैं कि भार 16 या इसके गुणितों में प्रयोग किये जाते थे। उदाहरण के लिए 16, 64, 160, 320 व 640 आदि। 16 की यह परम्परा भारत में अब तक विद्यमान है। जैसे– 16 आने से एक रूपया बनता है। हड़प्पा सभ्यता के लोग नापने की विधि के विषय में भी जानते थे। हमें ताँबे की बनी एक ऐसी छड़ी भी मिली है जिस पर नापने के लिए निशान बने हैं।

2. मुद्रायें–

हडप्पा सभ्यता के आर्थिक अध्ययन में प्राप्त मुद्राओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। अब तक लगभग 2000 मुद्रायें मिल चुकी हैं। ये मुद्रायें प्रायः गोल या आयताकार होती थी। यें सेलखडी की बनी होती थी। ये मुद्रायें समय समय पर रावी नदी में से मिली हैं। ये मुद्रायें सिंधु सभ्यता के विषय में जानने के लिए एक प्रमुख साधन है। मैके के अनुसार मुहरों पर अंकित चित्रों से तत्कालीन भाषा व लिपि के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सब मुहरों में सबसे महत्वपूर्ण मुहर वह है जिसमें एक ऐसा नग्न देवता चित्रित किया गया जिसके एक सींग व तीन मुँह हैं। यह देवता एक मेज पर बैठा है। उसके चेहरे पर धार्मिक भाव है एवं उसके चारों ओर बहुत से जानवर खड़े हैं। मार्शल के अनुसार यह शिव की मूर्ति है। 3 अन्य मुहरें जो इसी प्रकार की हैं, की मिली हैं। 2 मुहरों में देवता एक मेज पर बैठा है परन्तु तीसरी मुहर में वह जमीन पर बैठा है। देवता नग्न है, परन्तु जहाँ तक सींगों का प्रश्न है वो हर देवता के सिर पर है। यह चित्र किसी कुँआरी कन्या या किसी देवता की पत्नी का समझा गया है।

मोहन जोदड़ों की एक मोहर यह बताती है कि शेर को देवी का प्रतिरूप माना जाता था। मैके के अनुसार पुराने जमाने में इस देवी को शिव की पत्नी माना जाता था। एक अन्य मोहर पर एक भैसे का चित्र है जो लोगों के समूह को हराकर शान से इस प्रकार खड़ा है जैसे अपने दुश्मनों को हराकर कोई योद्धा खड़ा हो। शायद यह अपने शत्रुओं को परास्त करने वाले किसी देवता का चित्र है।

उपर्युक्त मुहरों के चित्रण से पता चलता है कि किसी एक ही शरीर को लेकर उसमें कई सिरों को जोड़ दिया गया है। इन चित्रों में हिरणों व बैलों के छोटे बड़ें सींगों को अधिक जोड़ा गया है। अधिकतर आकृतियाँ बिना कपड़ों के हैं अतः पोशाकों के विषय में बताना कठिन है। प्राचीन काल में इस प्रकार की मोहरों का प्रयोग अन्य प्राचीन देश किया करते थे। इससे पता चलता है कि इनका प्रयोग किसी वस्तु को प्रमाणिक बनाने के लिए किया जाता था। जैसे, मर्तबान के ढक्कन, बंद दरवाजे आदि। हालांकि इस प्रकार के निशानों के अधिक उदाहरण नहीं मिले हैं, किन्तु एक जगह ऐसा देखने में आया है कि मोहन जोदड़ों में मिट्टी के एक ढेले के एक ओर तो सींग वाले घोड़े की बड़ी मुद्रा का निशान है व दूसरी ओर धागे से बंधे हुए घास के गठ्ठे का निशान है। जिससे लगता है कि यह मुद्रा या तो किसी गठ्ठर के साथ बंधी थी या घास के किसी दरवाजे के साथ। शायद ये मोहरें किसी विशेष अभिप्राय के लिए होती थी क्योंकि इनके साथ किसी ऐतिहासिक दस्तावेज को नहीं बांधा गया है।

ऐसा लगता है कि मोहनजोदड़ों के निवासी इन मोहरों को अत्यन्त आवश्यक समझते थे एवं प्रत्येक निवासी अपने साथ एक मुहर रखता था। ऐसा भी देखने में आया है कि घोड़े के ऊपर वाले निशान को काटने का प्रयत्न किया गया है एवं वहाँ पर दूसरे को जोड़ने का प्रयत्न किया गया है। शायद एक आदमी के मरने के बाद दूसरा उसका उपयोग करता रहा हो और इसलिए दूसरे ने पहले के निशान को हटा दिया है।

3. आर्थिक दशा–

पिग्गट के अनुसार, हड़प्पा 2 राजधानियों द्वारा प्रशासित किया जाता था। दोनों राजधानियों की दूरी 350 मील थी, जोकि एक नदी द्वारा एक दूसरे से जुड़ी थी। यदि हम इन्हें उत्तर व दक्षिण दो क्षेत्रों में विभक्त करना चाहें तो भी वे एक ही इकाई के दो भाग लगते हैं। व्हीलर के अनुसार यह तथ्य चाहे जहाँ से उदित हुआ हो किन्तु प्रशासन में धर्म का हस्तक्षेप था। सुमेर व अक्काद के पुरोहित राजा की भाँति ही हड़प्पा के स्वामी अपने नगरों का शासन चलाते थे। इस प्रकार के राज्य में साधारण व्यक्ति को कोई अधिकार प्राप्त न थे। यदि हड़प्पा की शासन प्रणाली को आदर्श समझा जाये तो मौर्यकाल तक ऐसा विशाल साम्राज्य देखने को नहीं मिलता। इस शासन प्रणाली का स्थायित्व तो इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि यह शासन प्रणाली 600 वर्ष तक प्रचलित रही। हड़प्पा के स्वामी व्यवसाय में अधिक रूचि रखते थे न कि साम्राज्य विस्तार में। शायद इस सभ्यता के स्वामी व्यापारी थे।

क. कृषि–

वर्तमान में सिंधु क्षेत्र उत्पादक नहीं है, परन्तु प्राचीन समय में यह उत्पादक रहा होगा। ऐसा इसके समृद्ध नगरों से प्रकट होता है। वर्तमान में यहाँ 15 सेमी वर्षा होती है। ईसा पू0 चौथी शताब्दी में सिकन्दर के इतिहासकार ने लिखा है कि सिंधु में उत्पादक भूमि थी। प्राचीन समय में सिंधु क्षेत्र में ऐसी वनस्पतियाँ उगती थी जिन्हें अधिक वर्षा चाहिए। इन वनस्पतियों का प्रयोग ईटों को पकाने के लिए एवं ईंधन के रूप में किया जाता था। समय के साथ–साथ प्राकृतिक वनस्पतियाँ, कृषि भूमि के विस्तार, पशुओं द्वारा चरने व ईंधन के रूप में जलने के कारण समाप्त होती गयी। इस क्षेत्र की उपजाऊपन सिंधु नदी के बहाव के कारण था।

सिंधु सभ्यता के लोग नदी के समतल स्थानों पर नवम्बर के महीने में बीज बोते थे जब बाढ़ का पानी उतरता था। वे अपनी फसल अप्रैल में काटते थे जब दोबारा बाढ़ आने वाली होती थी। हल का फल भी लकड़ी का होता था, किन्तु यह पता नहीं चलता कि इसे बैल खींचते थे या आदमी। लोग गेहूँ, जौ, मटर, राई आदि उगाते थे। वे गेहूँ व जौ दो प्रकार का उगाते थे। बनावली से अच्छी किस्म का जौ मिला है। इसके अतिरिक्त वे तिल व सरसों भी उगाते थे। किन्तु हड़प्पा व लोथल के निवासियों के साथ स्थिति भिन्न थी। ऐसा लगता है कि 1800 बी.सी. के आसपास वे चावल का प्रयोग भी करते थे। अनाज को हड़प्पा, मोहनजोदड़ों और शायद कालीबंगा के निवासी बड़े–बड़े गोदामों में सुरक्षित रखते थे। रूई का ज्ञान सबसे पहले सिंधु सभ्यता को ही था। शायद इसी कारण यूनानी निवासी रूई को सिंडन कहते थे।

ख. पशुपालन–

हड़प्पा निवासियों द्वारा कृषि में सहायक पशु पाले जाते थे, जैसे– बैल, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर आदि। कूबड़ वाला बैल उन्हें पसन्द था। कुत्ता आरम्भ से ही पालतू माना जाता था। बिल्ली भी पालतू थी। बिल्ली व कुत्ते के पैरों के निशान मिले हैं। गधे व ऊँट का प्रयोग बोझा उठाने के लिए किया जाता था। घोड़े के ज्ञान के प्रमाण मोहनजोदड़ों

की ऊपरी सतह से व एक संदेहात्मक टेरीकोटा से मिले हैं जो लोथल से मिली है। घोड़े के अवशेष सुरकोटदा से प्राप्त हुए हैं जो लगभग 2000 बी. सी. के हैं। किन्तु पहचान संदेहात्मक है। किन्तु यह तो निश्चित है कि घोड़ा प्रायः प्रयोग नहीं होता था। लोग हाथी व गैडें को भी जानते थे। सुमेरियन लोग हड़प्पा सभ्यता की भाँति ही अनाज व पशु पालते थे लेकिन गुजरात के लोग चावल उगाते थे व हाथी पालते थे जोकि मेसोपोटामिया में नहीं था।

ग. तकनीकी व कलायें–

हड़प्पा सभ्यता कास्य युग में थी। हड़प्पा सभ्यता के लोग बहुत से औजार व पत्थर के औजार प्रयोग करते थे। किन्तु वे काँसे के प्रयोग को भी भली भाँति जानते थे। काँसे को टिन व ताँबे को मिलाकर बनाया जाता था क्योंकि वे दोनों धातुओं ही सरलता से प्राप्त होने वाली नहीं थी। काँसे का बना हुआ हड़प्पा निवासियों का सामान इस बात को प्रदर्शित करता है कि इसके मिस्त्री समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। वे केवल मूर्तिया या आकृतियाँ ही नहीं बल्कि बर्तन, औजार, हथियार, कुल्हाड़ी, आरी, चाकू आदि भी बनाते थे। हड़प्पा में अन्य कलायें भी थी। मोहनजोदड़ों से एक बुना हुआ रूई का कपड़ा मिला है। बुनाई का प्रभाव अन्य वस्तुओं पर भी मिला है। जुलाहे ऊन व रूई के कपड़े बनाते थे। ईटों के बने बड़े बड़े अवशेष बताते हैं कि ईंटों का बनाना भी एक प्रमुख उद्योग था।

कारीगरों के एक वर्ग के होने के भी प्रमाण मिले हैं। हड़प्पा निवासी नाव भी बनाते थे। मुहर बनाना व टेरीकोटा बनाना भी एक महत्वपूर्ण उद्योग था। सुनार सोने, चाँदी व पत्थर के गहने भी बनाते थे। भोजनालयों के भी प्रमाण मिले हैं। कुम्हार के चाक का भी प्रयोग होता था जिससे कुम्हार चिकने व चमकदार बर्तन बनाते थे।

घ. विज्ञान–

हड़प्पा निवासी खनन, धातु कार्य, दुमंजिल भवन निर्माण आदि के विषय में जानते थे। वे खड़िया सीमेंट भी बनाना जानते थे जिससे पत्थर ही नहीं धातुएँ भी जोड़ी जा सकती थी। वे दीर्घकाल तक चलने वाले रंग बनाना भी जानते थे। मोहनजोदड़ों में एक सार्वजनिक स्नानागार भी मिला है जोकि एक चतुर जल प्रणाली द्वारा नियंत्रित था।

ड. व्यापार–

हड़प्पा के निवासियों के सामान्य जीवन में व्यापार की उपयोगिता केवल अनाज गोदामों की उपस्थिति से ही नहीं बल्कि विभिन्न मुहरों, लिपि, भार व विभिन्न स्थानों पर पाये गये मापतौल के साधनों से प्रकट होती है। हड़प्पा सभ्यता के निवासियों को कच्चे माल की कमी थी जिसे वह दूसरे स्थानों से आयात करते थे। वे धातु मुद्रा का प्रयोग नहीं करते थे। शायद वे वस्तु विनिमय प्रणाली का प्रयोग करते थे। तैयार माल व अनाज के बदले वे अपने पड़ौसी स्थानों से नाव या बैलगाड़ियों में धातु का आयात करते थे। वे पहिये व गाड़ी का प्रयोग जानते थे। वे ठोस पहियों का प्रयोग करते थे। हड़प्पा निवासी आधुनिक 'इक्का' की भाँति एक गाड़ी का प्रयोग किया करते थे।

हड़प्पा निवासी निम्न वस्तुओं का आयात करते थे–

अन्य देशों से	भारत के अन्दर से
अफगानिस्तान – सोना, चाँदी, सीसा	हिमालय – शिलाजीत
ईरान – टिन, चाँदी, सीसा	खेतडी – ताँबा
बलूचिस्तान – ताँबा, सेलखडी	दक्षिणी भारत – सोना, घूसर, भूरा रंग
फारस – सोना	राजस्थान – सेलखडी, सीसा
मेसोपोटामिया – लाजवर्द	गुजरात – सेलखडी
बदख्शां – नील रत्न	महाराष्ट्र – नीलमणि
	सौराष्ट्र – शंख, कौडिया
	नीलगिरी – हरा पत्थर

हड़प्पा निवासी निम्न वस्तुओं का निर्यात करते थे–

1. फारस की खाडी – सोना, चाँदी, ताँबा, लाजवर्द, पत्थर के मनके, हाथी दाँत के कंघे, काजल, लकड़ी, हीरे, बंदर, मोर।
2. सुमेर – मुहरें, हीरा, लकड़ी, मूर्तिया
3. यूनान – रूई
4. बेबीलोन – रूई
5. मेसोपोटामिया – हीरे

6. मिस्र – हीरे, हार, स्टूल, मूर्तियाँ, चम्मचें, मोमबत्तीदान इत्यादि।

हड़प्पा निवासियों ने उत्तरी अफगानिस्तान में एक व्यापारिक कालोनी स्थापित की जो मध्य एशिया के साथ व्यापार में सहायक थी। उनका दजला व फरात से भी व्यापारिक सम्बन्ध था। मेसोपोटामिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार उसका 2350 बी.सी. को मेलुहा नामक किसी शहर के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे जोकि सिंध को कहते थे। मेसोपोटामिया के प्रलेख मेलुहा के रास्ते में दिलबन व मकान नाम की 2 कालोनियों के विषय में बताते हैं। दिलबन शायद फारस की खाड़ी के बहरीन को कहते थे। खुदाई के दौरान जो मुहरें मिली हैं ऐसा लगता है कि वे विनिमय बिल का कार्य करती थी। हड़प्पा निवासी दशमलव प्रणाली से परिचित थे। वे मापतौल के विषय में जानते थे। सुमेर व सिंधु के मध्य बलूचिस्तान के रास्ते से व्यापारिक सम्बन्ध थे। यूनानी लोग रूई को सिंडन नाम से पुकारते थे जो उनके मध्य व्यापारिक सम्बन्धों को प्रकट करता है।

कुछ पौराणिक कथाओं में सिंधु के लिए दिलमन शब्द का प्रयोग किया गया है। आन्तरिक व्यवसाय से ज्यादा विदेशों से व्यवसाय के विषय में अधिक जानकारी मिलती है। क्वेटा से तेहरान के बीच का यह रास्ता प्रसिद्ध था– क्वेटा – कन्धार – हेलमंड – हिसार – तेहरान। शायद सुमेर के व्यापारी भारतीय वस्तुओं को मिस्र जाकर बेचते थे। वे बाँट के प्रयोग को जानते थे।

4. सिंधु सभ्यता का पतन–

हड़प्पा सभ्यता लगभग 1000 वर्षो में समाप्त हो गयी। जब आर्यो का भारत में आगमन हुआ तब यकायक यह सभ्यता समाप्त हो गयी। चिल्ड, गार्डन व व्हीलर के अनुसार आर्यों का आक्रमण सिंधु सभ्यता के पतन का कारण था। ऋग्वेद के अनुसार आर्यो को ऐसे लोगों से युद्ध करना पड़ा जिनके बाहर के चारों ओर एक मोटी दीवार थी। जो बताता है कि सिंधु सभ्यता ही वह सभ्यता है जिसका जिक्र ऋग्वेद में किया गया है। खुदाई से भी पता चलता है कि मोहनजोदड़ों में स्त्री, पुरूष व बच्चों का सामूहिक नरसंहार कर दिया गया था। उनके मृत शरीर गलियों व घरों में फेंक दिए गये थे। बहुत से अस्थि पिंजर विभिन्न दशाओं में पड़े मिले हैं। एक स्थान पर बहुत से अस्थि पिंजर एक ढेर की शक्ल में मिले हैं। यह समझा जाता है कि ये सभी एक परिवार के हैं जिनकी हत्या कर दी गयी थी। निर्विवाद रूप से यह कहा जा सकता है कि अवशेष उसी समय के हैं जब मोहनजोदड़ों पर शत्रुओं द्वारा आक्रमण किया गया था।

प्रशासनिक शिथिलता भी सिंधु सभ्यता के विनाश का एक प्रमुख कारण थी। सिंधु सभ्यता की भवन निर्माण कला, दीवारों का निर्माण व चबूतरा आदि सभी पर ह्रास के चिह्न हैं। अन्तिम समय में टीले पर और अधिक विस्तार के लिए जगह नहीं बची। लोगों ने ऐसे कार्य करने आरम्भ कर दिये जोकि वातावरण में परिवर्तन में सहायक थे और अन्त में जिन्होंने सभ्यता का अन्त कर दिया। करोड़ों टन लकड़ी ईंटों को बनाने व निर्माण में समाप्त कर दी गयी। निकटवर्ती वनस्पति पशुओं ने चरकर समाप्त कर दी। उपरोक्त सभी कारणों ने वातावरण को प्रभावित किया जिससे वर्षा आरम्भ हो गयी। अधिकाधिक उपज लेने के कारण भूमि भी बंजर होती गयी। प्रकृति ने भी इस सभ्यता के अन्त में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

विदेशी व्यापार में गिरावट भी सिंधु सभ्यता के विनाश का एक प्रमुख कारण था। मेसोपोटामिया व सिंधु सभ्यता से प्राप्त प्रमाणों से पता चलता है कि अन्तिम समय में दोनों के मध्य व्यापार कम हो गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि शासन को चतुर लोगों के हाथों से छीन लिया गया था। विदेशी व्यापार सिंधु सभ्यता की समृद्धि का प्रमुख स्रोत था। अतः इसके क्षय का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। इस क्षय के कारण नयी खोजों व विचारों का आदान प्रदान समाप्त हो गया एवं अनुभव सीमित रह गया। यह सिंधु सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण था। राइक्स व वेल्स के अनुसार पृथ्वी में परिवर्तन के कारण अरब सागर के उत्तर में एक टीला उभरने लगा जोकि नदियों के प्रवाह में अवरोध था। जिससे नदियों के किनारे रेत जमा होने लगी जिससे यातायात प्रभावित होने लगा एवं लोगों का मनोबल क्षीण हुआ। वे घरों को छोड़कर जाने लगे। उपज कम होने लगी जिससे सभ्यता का पतन हुआ।

उपर्युक्त के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सत्य नहीं लगता कि इतनी विशाल सभ्यता का पतन किसी एक कारण से हुआ होगा। प्रत्येक शहर का पतन अनेक कारणों से हुआ है।

संदर्भ

1. "Archeological Site of Harappa". World Heritage Centre. UNESCO. Retrieved 19 February 2013.
2. Aronovsky, Ilona; Gopinath, Sujata (2005). The Indus Valley. Chicago: Heinemann.
3. Basham, A. L. 1968. Review of A Short History of Pakistan by A. H. Dani, Karachi: University of Karachi Press. 1967
4. Chakrabarti, D. K. (2004). Indus Civilization Sites in India: New Discoveries. Mumbai: Marg Publications. ISBN 81-85026-63-7.

5. Dani, Ahmad Hassan (1984). Short History of Pakistan (Book 1). University of Karachi.
6. Gupta, S. P. (1996). The Indus-Saraswati Civilization: Origins, Problems and Issues. Delhi: Pratibha Prakashan. ISBN 81-85268-46-0.
7. Kenoyer, J.M., 1997, Trade and Technology of the Indus Valley: New insights from Harappa Pakistan, World Archaeology.
8. Lahiri, Nayanjot (ed.) (2000). The Decline and Fall of the Indus Civilisation. Delhi: Permanent Black. ISBN 81-7530-034-5..
9. Lal, B. B. (2002). The Sarasvati flows on.
10. McIntosh, Jane (2008). "Religion and ideology". The Ancient Indus Valley: New Perspectives. ABC-CLIO. ISBN 978-1-57607-907-2.
11. Mughal, Muhammad Aurang Zeb (2011). 'Harappan Seals'. Kevin Murray McGeough (ed.), World History Encyclopedia, Vol. 4. Santa Barbara.
12. Pittman, Holly (1984). Art of the Bronze Age: southeastern Iran, western Central Asia, and the Indus Valley. New York: The Metropolitan Museum of Art. ISBN 9780870993657.
13. Robbins Schug G, K Elaine Blevins, Brett Cox, Kelsey Gray, and V Mushrif-Tripathy. (2013) Infection, Disease, and Biosocial Process at the End of the Indus Civilization. Retrieved 10 January 2014.
14. Wright, Rita P. (2009), The Ancient Indus: Urbanism, Economy, and Society, Cambridge University Press, ISBN 978-0-521-57219-4, retrieved 29 September 2013
15. 'हडप्पा सभ्यता एवं वैदिक साहित्य', भगवान सिंह, राधाकृष्णा प्रकाशन प्रा0 लिमिटेड, 2011. ISBN 8171193013, 9788171193011
16. 'सिंधु सभ्यता' – किरण कुमार थापलियाल एवं संकटाप्रसाद शुक्ला, उत्तर प्रदेश ग्रथ एकेडमीं, 1976.
17. 'भारतीय पुरातत्व और प्रागैतिहासिक संस्कृतियाँ' – शिवस्वरूप साहनी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, ISBN : 8120820789, 9788120820784
18. 'भारतीय इतिहास का मध्यप्रस्तर युग' – विदुला जायसवाल, स्वाती पब्लिकेशन, 1989.
19. 'प्राचीन भारत' – आलोक कुमार पांडे, टाटा मैकग्राहिल एज्युकेशन, ISBN : 0070705445, 9780070705449.
20. 'भारत का इतिहास' – रेडी, टाटा मैकग्राहिल एज्युकेशन, ISBN : 0071329242, 9780071329248.
21. 'प्राचीन भारत का इतिहास' – शलैन्द्र सागर, एटलांटिक पब्लिशर 2005. ISBN : 8126904844, 9788126904846.
22. 'आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास' – मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन, ISBN : 8120834658, 9788120834651.